–अंधे की लाठी।कहानी। नन्दलाल भारती

पालगी भईया कहते हुए धूलीचन्द पांव छूआ और सामने खड़ा होकर भीखनरायन की दीन–दशा को चकित होकर निहारने लगा ।

खुश रह धूलीचन्द । कैसे हो ? घर में सब ठीक है । खटिया पर बैठ दूर क्यों खड़ा है ।

तू भी बूढा हो गया । तूझे मैंने गोद में खेलाया है ।

हां– भईया वक्त कहां किसको बख्शा है रियासतें मिट गयी । राजा–महाराजाओं के नाम मिट गये । मैं तो अदना सा इंसान हूं । परमात्मा की कृपा है । तुम बताओ भीखनरायन भईया कैसे आना हुआ मुद्तो बाद। रिटायरमेण्ट कैसा कट रहा है दमादो के साथ । भईया तुम तो स्वर्ग का सुख भोग रहे होगे ?

धूलीचन्द की बाते सुनकर भीखनरायन की आंखे भर आयी । वह गमछा से आंखों की बाढ रोकते हुए बोला भईया नरक भोग रहा हूं ।

धूलीचन्द–स्वर्ग के सुख की चाह में भाई –भतीजो का कागजी कत्ल करवाकर । हक–हिस्सा तक हड़पकर । सगे–बेटी –दमाद और सौतेली बेटी दमाद को वारिस बना दिये । आज खुद के रचे चक्रव्यूह में फंस गये । आंसू से रोटी गीली कर रहे हो । भईया उधार की ममता में बर्बादी के बीज क्यो बो दिये । आज दर–दर की ठोकरें खा रहे हो । मुझे मालूम हो गया है जिस भाई अधीरनरायन की चौखट को उखाड़ फेंकने की सौगन्ध खा कर गये थे उस चौखट की छांव में तुम खुशी से तो नही आये होगे ।

भीखनरायन–हां धूलीचन्द अब यही दरवाजा खुला है बाकी तो बन्द हो चुके है । सौतेले दमाद प्रभु ने तो मेरे रिटायरमेण्ट की रकम अंगूठा लगवाकर हड़प लिया । थाने में गुहार लगाया पर कोई सुनवाई अभी तक नही हुई । सगे–बेटी दमाद के लिये भी छूछा हो गया हूं । कहते है न छूछा को कौन पूछा ।

धूलीचन्द–सबसे ज्यादा प्रिय तो तुम्हारा प्रभुवा दमाद था । वही धोखेबाज निकला । सदर तहसील में सी.आर.ओ. होकर भी ऐसी नीचता कर गया । दगाबाज प्रभु तो अंधे की लाठी ही तोड़ दिया। भईया दुनिया में सब तुम्हारे बेटी दमाद जैसे ही लोग नही होते । लोग छूछे को भी पूछते है तभी तो यहां बैठे हो । सब माया के पीछे नही भागते । सन्तोष बहुत बड़ा सुख है । उसी सन्तोष का फल अधीरनरायन भईया को मिल रहा है । तुम तो जानते हो तुम्हारे फेंक देने के बाद कितनी मुसीबते अधीरनरायन भईया के उपर आयी । बच्चो को पेट भर रोटी नही मिलती थी । गरीबी और तुम्हारे दगाबाजी से आहत बुढिया दम तोड़ दी । गरीबी की नईया में डूबते उतिरियाते अधीरनरायन भईया के दोनों बेटो ने कामयाबी तो पा लिया है । देखो दरिद्र अधीरनरायन भईया आज सचमुच स्वर्ग का सुख भोग रहे है । तुम हक –हिस्सा हड़प कर बने धनवान नरक भोग रहे हो ।

भीखनरायन–बुढिया की जिद के आगे मेरी एक ना चली धूलीचन्द। वह तो स्वर्ग सिधार गयी । मैं नरक का जीवन जी रहा हूं । सन्तोष के फल की महिमा समझ में आ गयी है। जमीन–जायदाद सबसे अधीरनरायन को बेदखल कर दिया । देखो वही भाई चैन की रोटी खा रहा है और मैं दर–दर की ठोकरें ।

धूलीचन्द–भईया सच कहा गया है बोया बीज बबूल का तो आम कहां से खाय ।

भीखनरायन–मुझे पछतावा है धूलीचन्द । काश भाई –भतीजों के सपनो की बारात में आग नही लगाता तो मेरी ये दुर्गति नही होती ।

धूलीचन्द–भईया अपना हिस्सा लेकर बेटी दमाद को देते तो किसी को तकलीफ नही होती । अब तो यह कानूनन अधिकार हो गया है पर भाई का हक हड़पकर अच्छा नही किया ।

भीखनरायन–तभी तो नरक का दुख भोग रहा हूं । काश बुढिया की जिद के आगे नही झुकता तो ये दुर्दिन नही देखना पड़ता ।

धूलचन्द–भईया तुमने गरीब जानकर अधीरनरायन भईया का हक खुली आंखो से लूटा था । दूसरी ओर देखो तुम्हारे सौतेले दमाद ने जिसपर अधिका विश्वास था कि तुम्हे स्वर्ग का सुख देगा । वही तुम्हारा अंगूठा काट कर चल–अचल

सम्पति का मालिक बन बैठा । तुम दीन–दरिद्र जैसे भटक रहे हो । भईया पराया खून सगे का मुकाबला नही कर सकता ।
भीखनरायन–समझ में आ गया है धूलीचन्द।
धूलीचन्द–क्या करेगा समझ में आकर । जब सहारा बनना था तब तो गरीब सगे भाई को मुसीबतों की खाई में ढकेल दिये । अब तो तुम खुद लाचार हो । सहारे की लाठी तुम्हारे अपने दमाद प्रभु,सी.आर.ओ तहसील सदर ने छिन कर तुम्हे लखपति से सड़कपति बना दिया है।
भीखनरायन–अंधे की लाठी तो छिन गयी है। जीवन के इस सांध्य काल में खून का रिश्ता ही मेरे लाठी बनेगे । मुझे यकीन है ।
धूलीचन्द–यकीन नही टूटा होता तो तुम्हारी लाठी में बहुत जोर होता भईया । खैर देर तो बहुत हो गयी है पर मुझे भी यकीन है तुम्हारे दोनो भतीजे तुम्हारे दुख को समझेगे । भले ही तुम्हारे धोखेबाज दमाद सी.आर.ओ.सदर,प्रभु ने करोड़ो की चल–अचल सम्पति क्यों न छिन ली हो ?
भीखनरायन की आंखो से तर–तर आंसू टपक रहे थे । धूलीचन्द समझा जा रहा था । इसी बीच श्रीबाबू आ गया । बूढे ताउश्री की आंखो में आंसू देखकर उनके पैर के नीचे से जैसे जमीन खिसक गयी। वह ताउश्री के आंसू पोछते हुए बोला दादा कौन सी मुसीबत आ गयी ।
भीखनरायन–बेटा मुझ अंधे की लाठी टूट गयी ।
श्रीबाबू–दादा तुम्हारी लाठी कैसे टूट सकती है ?
भीखनरायन–बेटा जिसके लिये तुम लोगो के साथ बेईमानी किया वही जीवन भर की कमाई छिन कर धकिया दिये। अब तो मेरी हालत कुत्ते–बिल्ली जैसी हो गयी है । रो–रोकर भीखनरायन आप बीती बताने लगे ।
श्रीबाबू–दादा हम तुम्हारी लाठी है । ऐसा नही है कि जो बेईमानी तुमने बेटी दमाद के मोह में पड़कर किया है भूल गये है । याद है दादा हम दोनों भाई पानी पीकर स्कूल जाते थे । मेरे मां–बाप का श्रम हमारी ताकत रहा है । उन्ही के श्रम का नतीजा है कि हम दोनो भाई दो जुन की रोटी इज्जत से कमा खा रहे है । हमारे बाप जो झोपड़ी में दिन काटा करते थे । देखो पक्की बैठक में बैठे है । तुम हक छिन कर ससुराल जा बसे । दादा तुम आज अपनी हाल और हमारे बाप की तुलना तो करो । देखो जो लोग गरीब जानकर दुत्कार दिया करते थे । वही सलाम ठोंकते है । हम तो कभी भी तुम्हारे धन के भूखे नही थे । सब समय का दोष है तुम्हारा नही ।
भीखनरायन–बेटा मैं शर्मिन्दा हूं तो उसकी वजह है तुम्हारी बड़ी ताई,हमारी घरवाली जो बेटी दमाद के मोह में मुझसे अनर्थ करवायी और खुद मुझसे पहले उपर पहुंच गयी मै रह गया नरक भोगने को ।
श्रीबाबू–दादा खुद को ना कोसो । बड़े–बड़े राजाओं ने भी सन्तान के मोह में ऐसा किया है ।
श्रीबाबू दादा भीखनरायन से चर्चारत् था । इसी बीच श्रीधर भी सप्ताह भर बाद आ गया । 25 साल की लम्बी अवधि के बाद दादा भीखनरायन को अपने दरवाजे बैठा देखकर चकित रह गया । वह गाड़ी खड़ी कर भागते हुए आया और भीखनरायन का चरण स्पर्श करते हुए बोला दादा सब ठीक तो है ना । इतना सुनते ही भीखनरायन आंसू पोछते हुये बोले बेटा कुछ भी ठीक नही है । ठीक होता तो यहां आता ?
श्रीधर–दादा क्या कह रहे हो ?
धूलीचन्द–अंधे की लाठी टूट गयी ।
श्रीधर–मतलब ?
धूलीचन्द–धोखा ।
श्रीधर–कौन है धोखेबाज ।
धूलीचन्द– पहले तो तुम्हारे दादाजी ने तुम्हारे बाप के साथ धोखा किया अब भीखनरायन भईया के साथ दमाद प्रभु ने ।
श्रीधर–क्या हुआ दादा ?
भीखनरायन–कमाई और बेईमान की सब दौलत लूट गयी ।

श्रीबाबू –दादा ये तो होना ही था किसी की लूट जाती है किसी की छूट जाती है पर तुम्हारे लुटेरे को सजा दिलवा कर रहूंगा ।
श्रीधर–भाईश्रीबाबू सजा देना कचहरी का काम है । हां न्याय के लिये गुहार तो करना होगा ।
भीखनरायन–बेटा बिन्द्राबाजार थाने में अर्जी दे चुका हूं प्रभु के हेराफरी की। थानेदार ने कहा था जालसाज प्रभु कानून से नही बच पायेगा । रकम भी वापस मिल जायेगी। बाबा चिन्ता ना करो पर कई महीने हो गये कोई कार्रवाई नही हुई । प्रभु धमकी देता है कहता है जो करना चाहो कर लो । मेरा कुछ नही बिगाड़ पाओगे। मुझे डर है कि कभी मेरा गला दबा कर भईया की तरह मुझे भी पेड़ पर लटकाकर आत्महत्या का इल्जाम मेरे ही माथे न मढ दे।
श्रीबाबू–दादा फिर से पुलिस में शिकायत दर्ज करवायेगे ।
श्रीधर–दादा तुम्हारी सम्पति से हमें मोह नही है । मोह है तो बस तुमसे क्योंकि तुम हमारे बाप के सगे भाई हो और हमारे बड़े बाप हो। सगे खून के रिश्तेदार हो । तुम्हारी परवरिश करना हमारा फर्ज है । हम खून के रिश्तेदार है कानूनी रिश्तेदार नही ।
दादा विश्वास करो हम लोग तुम्हारी सेवा करने में तनिक भी कोतहाई नही बरतेगे । भीखनरायन–विश्वास है बेटा तुम लोगो पर । गलती तुम लोगों की नही गलती तो हमारी है । धोखा तो मैने किया है । होशो–हवास मे घरवाली की जिद और बेटी –दमाद के मोह की वजह से । कागजी कत्ल करवाकर चल–अचल सम्पति पर कब्जा किया था । अपनी बेईमानी पर आज मैं शमिन्दा हूं । मैं जिस बेटी दमाद के बहकावे में आकर भाई–भतीजों का हक हड़प लिया वही भतीजे मुझे आज भी बाप का सम्मान दे रहे है ।
धूलीचन्द–भईया ये तुम्हारे दोनो भतीजे श्रीधर और श्रीबाबू लोभी नही है तुम्हारे दमाद जैसे । दूसरों की मदद करने को तैयार रहते है । इनकी मां–बाप से इन्हे ये गुण मिले हैं विरासत में । तुम्हारी धन–दौलत से इन्हे तनिक भी नही मोह होगा । तुम तो इन पर विश्वास कर यही रह जाओ तुम्हारी माटी ये पार लगा देगे ।
श्रीधर–हां दादा । तुम्हारे पास अभी जो कुछ बचा भी है उसको भी अपनी बेटी पुष्पा के नाम लिखकर आ जाओ अपने भातीजों के यहां । दादा ये तुम्हारे पोती–पोते बहूये खूब सेवा करेगी । हमें तुम्हारी सेवा का मौका जायेगा क्या यह कम फायदा है । यह तो बड़े–बड़े धनासेठो को नही मिलता । ।
धूलीचन्इ–श्रीधर तुम भी फायदे की बात करने लगे ?
श्रीधर–हां काका अपने नही अपनी बहन पुष्पा के लिये ।
धूलीचन्द–पुष्पा को तुम फायदा पहुंचाओगे । तुम्हारी मुसीबतों के कारण तो वही बेटी दमाद है । तुम उनके फायदे की बात कर रहे हो ।
श्रीधर –काका सौतेली बहनोई को तो मै देखना नही चाहता जो मेरे बड़े बाप के विश्वास का खून कर दिया । वह तो दुश्मन बन गया है मानवता का । हम पुष्पा की बात कर रहे है । दादा को हमारे साथ रहने से पुष्पा को मायका मिल जायेगा । भाई–भाभी,भतीजे–भतीजी मिल जायेगे जिनके प्यार के लिये वह तरस रही होगी ।
भीखनरायन–हां ठीक कह रहे हो । बेटा तुम दोनो भतीजे नही मेरे बेटे हो ।तुम पर मुझे विश्वास है मेरी माटी को गिध्द कौवे नही खा पायेगे ।
श्रीधर–दादा कैसी बात कर रहे हो ये तुम्हारे दोनो बेटे कब काम आयेगे ।
भीखनरायन–बेटा तुम लोगो का हक छिनने के लिये हमने सौतेले दमाद प्रभु और समधी दूधनाथ के बहकावे में आकर क्या क्या षणयन्त्र नही रचा । तुम्हारे बाप को मरवाने तक की योजना बनवा दिया और तुम लोग मुझे सिर पर बिठा रहे हो ।
श्रीधर–दादा दुश्मनी का जबाब दुश्मनी से देने से क्या मिलेगा ? नफरत ना हमें नफरत के बीज नही बोना है । हम तुम्हारी परवरिश निःस्वार्थ करना चाहते है । हमें तुम्हारी दौलत नही चाहिये हमे तो बस तुम्हारी जरूरत है। सेवा का अवसर देकर उपकार करो दादा । इतना सुनते ही भीखनरायन उठे और दोनो भतीजों को गले लगाकर रोने लगे ।
धूलीचन्द भीखनरायन से बोला क्यों रोते हो भईया श्रीधर और श्रीबाबू जैसे भतीजों के रहते तुम जैसे अंधे की लाठी भले ही तुम्हारे अपने कानूनी विश्वासपात्र रिश्तेदारो ने तोड़ दिये है । ये खून के रिश्तेदार जिनके साथ अन्याय किये हो । वही तुम्हें लाठी का सहारा देगे । श्रीधर और श्रीबाबू एक स्वर में बोले हां दादा अब तो विश्वास करो ।